सीरते बीबी नफीसा ताहेरा

(बीबी नफीसा की कहानी)

मुरत्तिब

ख़लीफए-मुफ्तीए आज़म हिंद, मुनाज़िरे अहले सुन्नत, माहिरे रज़वियात,

अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी

"मस्रूफ" पोरबंदर (गुजरात)

नाशिर

मरकज़ अहले सुन्नत बरकाते रज़ा

इमाम अहमद रज़ा रोड, मेमन वाड, पोरबंदर (गुजरात)

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का,
तू है अैने नूर, तेरा सब घराना नूर का.
(अज़ : आ'ला हज़रत)

नबी की आल का नूरी मुक़द्दस वो घराना है,
नबी की आल का सदक़ा ज़माना खाता पलता है .
(अज़ : मस्रूफ हमदानी)

सीरते बीबी नफीसा ताहेरा

(बीबी नफीसा की कहानी)

मुरत्तिब

ख़लीफ ए-मुफ्तीए आज़म हिंद,
मुनाज़िरे अहले सुन्नत, माहिरे रज़वियात,

अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी

"मस्रूफ" (बरकाती - नूरी) पोरबंदर (गुजरात)

मरकजे अहले सुन्नत बरकाते रज़ा

इमाम अहमद रज़ा रोड, मेमन वाड, पोरबंदर (गुजरात)

Website :- www.markazahlesunnat.com
Email :- hamdani78692@gmail.com
Mob :- 9879303557, 9687525990, 9722146112

नाम किताब	:	"सीरते बीबी नफीसा ताहेरा" रदीअल्लाहो तआला अन्हा
मुरत्तिब	:	खलीफए-मुफ्तीए आज़मे हिंद, मुनाज़िरे अहले सुन्नत, माहिरे रज़वियात, अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी "मस्रूफ" (बरकाती-नूरी)
कम्पोज़िंग	:	हाफिज़ मुहम्मद इमरान हबीबी (मरकज़-पोरबंदर)
सने तबाअत	:	इ.स. २०१४ - दिसम्बर
ताअदाद:		११०० (अेक हजार, अेक सो)
नाशिर	:	मरकज़ अहले सुन्नत बरकाते रज़ा इमाम अहमद रज़ा रोड, मेमनवाड, पोरबंदर (गुजरात)

-: मिलने के पते :-

(1) Mohammadi Book Depot. 523, Matia Mahal. Delhi
(2) Kutub Khana Amjadia. 425, Matia Mahal. Delhi
(3) Farooqia Book Depot. 422/C, Matia Mahal. Delhi
(4) Maktaba-e-Raza. Dongri. Bombay
(5) New Silver Book Depot. Mohammad Ali Road. Bombay
(6) Maktaba-e-Rahmania. Opp & Dargah Aala Hazrat-Bareilly
(7) Kalim Book Depot - Khas Bazar, Tin Darwaja Ahmedabad

सय्यदा बीबी नफीसा की सच्ची कहानी

सिलसिलए नसब सय्यदा नफीसा बिन्ते सय्यद हसन अनवर बिन ज़ैद बिन सय्यदना इमाम हसन बिन सय्यदना मौला अली मुश्किल कुशा (रदीअल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन)

विलादते मुबारका हि.स. १४५ में मक्का मुकर्रमा में ज़ीनत अफज़ाए ख़ानदान हुए ।

सीरते शरीफा

मदीना तय्यबा में आप की इबादतो रियाज़त की ज़िंदगी शुरू हुई । अपने नातवां और कमज़ोर जिस्म को अल्लाह तबारक व तआला और उस के महबूब सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम की रज़ामंदी और ख़ुशनूदी के लिए वक्फ़ फरमा दिया था । इबादत का ये हाल था कि दिन को हमेशा रोज़ा रखतीं और रात इबादते इलाही में गुज़ार देतीं । आप की भतीजी बीबी ज़ीनत फरमाती हैं कि चालीस साल तक मैंने बीबी नफीसा की ख़िदमत की, मगर इस अर्से में कभी आप को न रात में सोते देखा, न दिन में सिवाए अय्यामे ममनूआ के बे-रोज़ा देखा । आप ने कुल तीस(३०) हज अदा फरमाए और इन में से अक्सर पैदल सफर कर के अदा फरमाए । आप ख़ौफे इलाही से बेहद रोया करती थीं । हज़रत बीबी ज़ीनत से किसी ने पूछा कि बीबी नफीसा की ख़ुराक कितनी थी?

फरमाया कि तीन दिन में एक रोटी । एक रिवायत में यूं आया है कि सिर्फ एक लुक़्मा तनावुल फरमातीं । आप के मुसल्ले के छींके में एक बरतन मुअल्लक़ था । जिस चीज़ की आप को ख़्वाहिश होती, वो चीज़ ख़ुदा की क़ुदरत से उस बरतन में से मिल जाती थी । हज़रत बीबी ज़ीनत फरमाती हैं कि एक रोज़ मैंने हज़रत सय्यदा की ख़िदमत में अर्ज़ की कि ये क्या मआमला है ? इरशाद फरमाया कि जो अल्लाह तआला का हो जाता है, तो ख़ुदावन्दे करीम तमाम चीज़ें उस के क़बज़े में दे देता है ।

दरबारे रसूल में मक़बूलियत

जब आप सगीर सन यानी छोटी उम्र की थीं, तब आप के वालिदे माजिद हज़रत सय्यद हसन अनवर रहमतुल्लाहे तआला अलयहे आप को सब्ज़ गुंबद वाले प्यारे आक़ा रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम के रोज़ए पाक पर लेकर हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! मैं अपनी बेटी नफीसा से राज़ी हूँ । आप के वालिदे माजिद इस तरह रोज़ए अक़दस पर हाज़िर हो कर चंद रोज़ तक अर्ज़ करते रहे । एक मरतबा हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम ने ख़्वाब में अपने जमाले जहां आरा से मुशर्रफ फरमा कर इरशाद फरमाया कि **"या हसनो ! अना राज़ियिन अन**

बिन्तिका नफीसता बेरिज़ा-का अन्हा-वल-हक़्क़ो सुब्हानहू-राज़ियिन-अन्हा-बेरिज़ाया-अन्हा" यानी "मैं तुम्हारी बेटी नफीसा से खुश हूँ तुम्हारे इस से खुश होने की वजह से, अल्लाह तआला इस से खुश है मेरे इस से खुश होने की वजह से ।" अल्लाहु अकबर ! इस से बढ़कर मक़्बूलियत की और कौन सी सनद हो सकती है ।

आप का निकाह

आप का अक़्द हज़रत इस्हाक़ इब्ने इमाम जाफर सादिक़ रदीअल्लाहो तआला अन्हुमा से हुवा । हज़रत इस्हाक़ भी बहुत बड़े बुज़ुर्ग और साहिबे करामत व विलायत थे । बहुत हदीसें आप से रिवायत की गई हैं । मोहद्दिसीने किराम आप को सीकातुर्रावी यानी मोअतबर रावी में मुलक़्क़ब करते हैं । हज़रत बीबी नफीसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा से उन के दो बच्चे तवल्लुद हुए । एक का नाम क़ासिम और एक का नाम उम्मुल कुलशूम रखा गया था । बीबी नफीसा अपने शौहर हज़रत इस्हाक़ के साथ हि. १८३ में मिस्र तशरीफ लाओं । वहां के लोगों ने बड़ी इज़्ज़तो हुरमत के साथ इन का इस्तिक़बाल किया । मिस्र के ताजिरों के बादशाह जमालुद्दीन अब्दुल्लाह ने अपने एक मकान में उन के क़याम का बंदोबस्त किया ।

बीबी नफीसा की करामत

माज़ूर लडकी तंदुरस्त हो गई

आप के पडोस में एक यहूदी का मकान था । उस की एक लडकी पांव से बिलकुल अपाहिज थी । लडकी की माँ ने एक मरतबा हम्माम में जाने का इरादा किया। बेटी से कहा कि अगर तू मेरे साथ आना चाहती है, तो तुझे वहां ले चलूं । बेटी ने कहा कि पैरों की माज़ूरी की वजह से हम्माम तक आने की मुझ में हिम्मत नहीं । उस की वालिदा ने कहा कि क्या तू तन्हा मकान में रेह सकेगी? लड़की ने जवाब दिया कि हमारे पड़ोस में बीबी नफीसा रहती हैं । तुम उन से इजाज़त लेकर अपनी वापसी तक मुझे उन के दरे मुबारक पर छोड जाओ । यहूदिया ने आप की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इजाज़त ली और अपनी माज़ूर लड़की को आप के मकान में एक जगह बिठा दिया । ज़ोहर की नमाज़ के वक़्त सय्यदा बीबी नफिसा ने वुज़ू फरमाया । वुज़ू का टपका हुवा पानी बहकर माज़ूर लड़की के पैरों के नीचे से गुज़रा । पानी का गुज़रना था कि माज़ूर लडकी फौरन खड़ी हो कर चलने लगी । जब उस की माँ हम्माम से वापस आई, तो अजीब मंज़र देखा । वो लडकी कि जिस के इलाज के लिए उस ने दुनिया भर की ख़ाक छान मारी थी । बडे बडे अतिब्बा और हकीम उस के इलाज से आजिज़ हो चुके थे और साफ जवाब दे दिया था कि ये बीमारी ला-इलाज है । मुद्दतुल उमर तेरी बेटी

ऐसी ही माज़ूर और लंज रहेगी । यहूदिया अपनी बेटी को चलते फिरते देखने की मुतमन्नी थी । उस की आँखें इस के लिए तरस रही थीं और इसी तमन्ना के पूरा होने के लिए वो हज़ारों दीनार ख़र्च कर चुकी थी । लैकिन हाज़िक़ हकीम ने इस बीमारी को ला-इलाज बताकर यहूदिया को बिलकुल मायूस और ना उम्मीद बना दिया था । आज उस की तमन्ना के उजड़े हुए चमन में बादे बहार आई । गुलहाए मुराद से अपने दामन को भरा हुवा देख कर उस का दिल बाग बाग हो गया। हसरत और नाउम्मीदी का दाग धूल हो गया । क्या देखती है कि वही माज़ूर और लंज बेटी अपनी माँ के इंतज़ार में खडी है । यहूदिया के तअज्जुब की कोई इन्तिहा न रही । बेटी से पूछती है कि तुझे कौन सी अकसीर शिफा मिल गई कि इस ला-इलाज मर्ज़ से तुझ को नजात हासिल हो गई । बेटी ने जवाब दिया कि ऐ मेरी शफीक़ माँ ! ये सब बीबी नफीसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा के वुज़ू के टपके हुए मुबारक पानी का फैज़ है और लड़की ने अपनी माँ से पूरी कैफियत बयान की । ये करामत देखकर वो यहूदिया और उस का शौहर फौरन ही कल्मए-शहादत पढ़ कर दौलते ईमान से मालामाल हो गए ।

सुबहानल्लाह ! सय्यदा बीबी नफीसा का दरे पाक जिस्मानी रुहानी मरीज़ों के लिए दारे शिफा है कि ला-इलाज बीमार शिफायाब होते हैं और कट्टर काफिर मुसलमान होते हैं । इस करामत ने न सिर्फ मिस्र बल्कि अतराफो अकनाफ में आप के नाम को मशहूर कर दिया । दूरदराज़ से लोग अपनी दीनी और दुन्यवी मुरादें ले कर आप के

मुक़द्दस दर पर हाज़िर होते और बा-मुरादो-शादशाद अपने मकान पर वापस जाते थे । लोगों का हुजूम रोज़ बरोज़ इस क़दर बढ़ता गया कि आप के अवरादो वज़ाइफ में ख़लल होने लगा । मजबूर हो कर आप ने मिस्र की सुकूनत तर्क फरमाने का इरादा कर लिया ।

लोगों की बीबी नफीसा से मिस्र न छोडने की गुज़ारिश

सय्यदा बीबी नफीसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा ने मिस्र की सुकूनत तर्क करने का इरादा फरमाया है, ये ख़बर फैलने से अहले मिस्र में सख़्त वहशत और परेशानी पैदा हुई । लोग मिस्र के अमीर के पास हाज़िर हो कर अर्ज़ करने लगे कि सय्यदा बीबी नफीसा का मिस्र से तशरीफ ले जाना हमारे लिए महरूमी और कम नसीबी का बाइस है । आप किसी तरीक़े से मोहतरमा सय्यदा को रोक लीजिए । अमीरे मिस्र आप के दरे अक़दस पर हाज़िर हुए और आप से मिस्र छोडने का सबब दरियाफ्त किया । इरशाद फरमाया कि लोगों का हुजूम रोज़ बरोज़ बढ़ता जाता है, जिस से मेरे अवरादो-वज़ाइफ में ख़लल होता है और दूसरा सबब ये है कि मेरे मकान में गुंजाइश भी बहुत कम है । अमीरे मिस्र ने अर्ज़ की कि आप ने मकान की तंगी का जो ज़िक्र फरमाया है इस सिलसिले में मेरी अर्ज़ है कि इस मआमले में आप बिलकुल फिक्र न फरमाएं । मैं अपना एक कुशादा मकान आप की ख़िदमत में नज़्र करता हूँ । उम्मीद है कि मेरी नाचीज़ नज़र को आप शरफे क़बूलियत से नवाज़ें ।

रही बात लोगों के हुजूम की, इस का एक ही इलाज है कि हफ्ते में सिर्फ दो दिन मख़्लूक़े ख़ुदा को फैज़ लेने का मौक़ा दिया जाए । शम्बा यानी सनीचर और चहार शम्बा यानी बुध का दिन मुक़र्रर फरमाया जाए । सय्यदा इस बात पर रज़ामंद हो गई ।

आप की करामत - परिन्दे का सूत की गटरी ले कर उड जाना । इस से ताजिरों की कश्ती का डूबने से बचना और बुढिया को सूत की क़ीमत मिलना

एक बुढ़िया औरत के शौहर का इन्तिक़ाल हो गया था । उस की चार लडकियां थीं । उन यतीम लडकियों की परवरिश का सिर्फ यही हीला था कि वो चारों लडकियां एक हफ्ते तक सूत कांत कर अपनी वालिदा को देतीं । वो बाज़ार में जा कर उस को फरोख़्त कर के उस की क़ीमत की रक़म के दो हिस्से करती । एक हिस्से से वो इतना अनाज खरीदती कि हफ्ते तक उन को काफी हो और एक हिस्से से सूत खरीदती, ताकि उसे कांत कर फिर अगले हफ्ते को बेच सके । इसी तरह उन की बसर औक़ात होती थी । एक मरतबा वो बुढ़िया अपनी लडकियों के काते हुए सूत को एक सुर्ख़ कपडे में बांधकर बाज़ार को जा रही थी कि नागाह एक बडा परिंदा आया और कपड़े में लिपटा हुवा सूत उचक कर ले गया । इस हादसे का बुढ़िया को इस क़दर रंज हुवा कि वो आहो-ज़ारी कर के रोने लगी । लोग उस के इर्द-गिर्द जमा हो गए । वो

बुढ़िया ज़ोर ज़ोर से रोती थी और कहती थी कि अब मेरी यतीम लडकियों की परवरिश कैसे होगी ? एक शख़्स ने उस बुढ़िया से कहा कि तुम अपनी इस मुसीबत को बीबी नफीसा ताहेरा की ख़िदमत में अर्ज़ करो । इन्शाअल्लाह तुम्हारी मुश्किल को वो हल फरमा देंगी ।

बुढ़िया रोती हुई सय्यदा की ख़िदमते आली में हाज़िर हुई और अपना दास्ताने गम बज़बाने दर्द व अलम अर्ज़ की । सय्यदा उस की दास्तान सुनकर बहुत गमगीन हुई । बंदा-नवाज़ रब्बुल आलमीन की बारगाहे बे-नियाज़ में दुआ के लिए हाथ उठाए और इस तरह दुआ की कि **“या-मन अला कुल्ले शयइन क़-द-र इरहम अ-म-त-क ल अजवज़ो व बना तहा”** यानी **“ए ! हर चीज़ पे क़ादिर ख़ुदाए तआला ! अपनी इस बंदी और इस की लडकियों पर रहम फरमा”** हज़रत सय्यदा ने ख़ुदाए तआला की बारगाह में बुढ़िया के लिए दुआ फरमाई कि इस की मुश्किल आसान फरमा और उस की लडकियों पर फज़्लो-करम फरमा । दुआ से फारिग हो कर आप ने बुढ़िया से फरमाया कि बैठ और देख कि अल्लाह तआला अपनी शाने करीमी और रहीमी का करिश्मा किस तरह दिखाता है । आप के हुक्म के मुताबिक़ बुढ़िया आप के दरे दौलत के दरवाज़े पर बैठ गई । यतीम बच्चों की भूक का ख़याल उसे बेताबो-बेचैन किए हुए था । थोडी देर के बाद ताजिरों का एक क़ाफला हज़रत सय्यदा ताहेरा बीबी नफीसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुवा । सय्यदा ने क़ाफले वालों से हाल दरियाफ्त फरमाया ।

क़ाफले वालों ने अर्ज़ किया कि ए गुले गुलज़ारे रसूले मक़बूल ! ए फातमी चमन के महकते हुए फूल ! खुदाए तआला की बेशुमार बरकतें तुम पर नाज़िल हों । हम तिजारत पैशा लोग हैं । अस्बाबे तिजारत कश्ती में लाद कर हम मिस्र की तरफ आ रहे थे कि अस्नाए राह हमारी कश्ती में एक सूराख़ हो गया । जिस की वजह से पानी कश्ती में आने लगा । उस सूराख़ को बंद करने की हम ने बहुत तदबीरें कीं, लैकिन किसी तरह वो बंद न होता था । हमें डूब जाने का ख़ौफ दामनगीर हुवा, तो हम ने आप के नाम की नज़्र मानी और आप का वसीला पैश कर के अल्लाह तआला की जनाब में दुआ की कि हम सहीह सालिम मंज़िले मक़सूद तक पहुंच जाएं । अचानक एक बडे परिन्दे ने उडते हुए एक सुर्ख़ गठरी कि जिस में काता हुवा सूत लिपटा था, हमारी कश्ती में फेंकी । हम ने उसे ताईदे गैबी और बरकते नफीसा बीबी समझ कर सूराख़ के मुँह पर रख दिया । सूराख़ फौरन बंद हो गया और हम सहीह सालिम मिस्र पहुंच गए । ये पाँच सौ दिरहम आप की मिन्नत के हैं । लिल्लाह क़ुबूल फरमाइए । सय्यदा ने क़ुबूल फरमा कर उस बुढ़िया को बुलाया । बुढ़िया हाज़िर हुई । सय्यदा ने बुढ़िया से दरियाफ्त फरमाया कि हफ्ते में काता हुवा सूत कितनी क़ीमत पर फरोख़्त होता था ? बुढ़िया ने अर्ज़ की कि बीस दिरहम क़ीमत मिलती थी । सय्यदा ने इरशाद फरमाया कि खुदा की क़ुदरत देख । एक दिरहम के बदले पच्चीस दिरहम तुझ को अता फरमाए हैं । और आप ने वो तमाम रक़म

पाँच सौ दिरहम बुढ़िया को अता फरमा दी । बुढ़िया का गम खुशी में बदल गया । सय्यदा को दुआएं देती हुई खुशी खुशी अपने मकान वापस हुई । इस वाक़िआ से सय्यदा पर एक क़िस्म की रिक्कत तारी हो गई और आप बहुत देर तक रोती रहीं ।

“करामत - क़ैद से आज़ादी हासिल होना”

एक शख़्स ने एक किताबिया औरत से शादी की। उस से एक लडका पैदा हुवा । जब वो लडका जवान हुवा तो हरबी काफिरों ने उसे क़ैद कर लिया । उस के माँ बाप को लडके का कुछ पता मालूम न हो सका । वो अपने प्यारे लडके की जुदाई में तडप तडप कर वक़्त गुज़ारते थे । एक दिन उस किताबिया औरत ने अपने शौहर से कहा कि हमारे शहर में सय्यदा बीबी नफीसा ताहेरा रौनक़ अफरोज़ हैं । उन की करामतों का चर्चा तमाम मुसलमानों बल्कि गैर-मुस्लिमों में भी मशहूर है । आप जा कर उन से अर्ज़ अहवाल करो । अगर उन की दुआ की बरकत से मेरा लडका वापस आ जाएगा तो मैं तुम्हारे दीन में दाख़िल हो जाऊंगी । उस किताबिया औरत का शौहर सय्यदा बीबी नफीसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और लडके की गुमशुदगी की कैफियत अर्ज़ की और लडके के वापस आने की दुआ का आप से तालिब हुवा । हज़रत सय्यदा ने दुआ फरमाई और इरशाद फरमाया कि जाओ ! आज रात को तुम्हारा लडका तुम्हारे मकान पर पहुंच जाएगा ।

जब रात हुई तो उन के मकान के दरवाज़े की ज़ंजीर किसीने खट खटाई । उस औरत ने दरवाज़ा खोला तो क्या देखती है कि उस का गुमशुदा लडका सामने खडा है । अपने जिगर के टुकडे को वापस पा कर वो औरत फर्ते मुसर्रत से झूम उठी । अपने प्यारे बेटे को सीने से लगाया और उस के गुम होने का हाल दरियाफ्त किया । लडके ने कहा कि मुझे हरबी काफिरों ने क़ैद कर लिया था । आज क़ैदख़ाने के दरवाज़े पर खडा था और जेलर ने जिस काम के करने का हुक्म दिया था । उसकी तामील की तय्यारी में था कि अचानक एक हाथ मुझ पर पडा और आवाज़ आई कि इस को क़ैद से आज़ाद करदो । इस आवाज़ के साथ ही मेरी बेडियां टूट गयीं और मैं क़ैद से आज़ाद हो गया । आवाज़ देने वाले ने ये भी आवाज़ दी कि इस लडके के हक़ में बीबी नफीसा की दुआ मक़बूल है । फिर मुझ पर बैहोशी तारी हो गई । जब होश आया, तो क्या देखता हूँ कि मैं अपने इस मोहल्ले में खडा हूं । इस करामत को देख कर वो किताबिया औरत और साथ में उस मोहल्ले के सत्तर (७०) मकान के बाशिंदों ने कल्मए-शहादत पढ़ कर दीने इस्लाम क़बूल किया और दौलते ईमान से मालामाल हुए ।

हज़रत सय्यदा बीबी नफीसा ताहेरा रदीअल्लाहो तआला अन्हा की मज़कूरा बाला करामत के अलावा ऐसी बेशुमार करामात हैं, जिन से आप का फज़्लो-कमाल और बारगाहे रब्बुलइज़्ज़त में आप की मक़बूलियत का पता चलता है । आप पाकीज़ा नफ्स और सुतूदा सिफात,

आबिदा, ज़ाहिदा, और कामेला वलिय्या थीं । ज़ोह्दो-तक़्वा और इबादतो-रियाज़त में आप ने अपनी ज़िंदगी का एक एक लम्हा खुलूसे निय्यत और अल्लाह व रसूल की रज़ा व खुशनूदी हासिल करने के लिए सर्फ फरमाया । आप की अज़्मत और बुजुर्गी का मिल्लते इस्लाम के अइम्मए किराम बुजुर्गो और उल्मा ने भी एतराफ किया है । आप का फैज़ हर आमो-ख़ास पर जारी था । मिल्लते इस्लामिया के अज़ीम अइम्मए किराम आप के अक़ीदतमंद थे और हुसूले नेअमतो बरकत के लिए आप की ख़िदमत में रुजू करते थे ।

हज़रत इमाम शाफई को आप से अक़ीदत

हज़रत इमाम शाफई रदीअल्लाहो तआला अन्हो जब बीमार हो जाते, तो तलबे दुआ के लिए आप की ख़िदमत में किसी ख़ादिम को भेज देते । सय्यदा बीबी इमाम शाफई के लिए दुआाए शिफा फरमा देतीं । अभी वो ख़ादिम लोट कर इमाम शाफई की ख़िदमत में पहुंचता भी नहीं कि इमाम शाफई को मर्ज़ से शिफा हासिल हो जाती । जब इमाम शाफई ने मर्ज़े वफात में तलबे दुआ के लिए हज़रत सय्यदा की ख़िदमत में ख़ादिम भेजा तो सय्यदा ने दुआए शिफा करने के बजाए फरमाया **"मत्तअहुल्लाहो बिन्नज़रे-इला-वजहिहिल-करीम"** यानी **"अल्लाह तआला इमाम शाफई को अपने दीदार से मुशर्रफ फरमाए"** । जब ख़ादिम वापस आया, तो इमाम शाफई रहमतुल्लाहे तआला अलयह ने ख़ादिम से फरमाया कि क्या आज सय्यदा ने मेरे लिए दुआए शिफा नहीं

फरमाई ? क्यों कि तुम वापस मकान पर पहुंच गए हो और अभी तक मुझे शिफा नहीं हुई। ख़ादिम ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर ! आज सय्यदा बीबी नफीसा ने दुआए शिफा के बजाए इस तरह दुआ की है। हज़रत इमाम शाफई समझ गए कि अब मेरी वफात का वक़्त क़रीब है और इसी लिए सय्यदा ने शिफा के लिए दुआ नहीं फरमाई। फौरन वसिय्यत नामा तेहरीर फरमाया और सय्यदा की ख़िदमत में कहलवाया कि मेरे जनाज़े की नमाज़ ज़रूर पढ़ें। गरज़ इसी मर्ज़ में इमाम शाफई का हि. २०४ में विसाल हुवा। आप का जनाज़ा जब सय्यदा के मकान के क़रीब पहुंचा, तो अमीरे मिस्र ने वहीं पर ही नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का हुक्म दिया। चुनांचे हज़रत सय्यदा के मकान के सामने वसीअ मैदान में इमाम अबू याक़ूब ने नमाज़े जनाज़ा की इमामत की और ज़म्मे गफीर ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। हज़ारहा औलियाए किराम और उलमाए इज़ाम ने नमाज़े जनाज़ा में शिरकत फरमाई। सय्यदा बीबी नफीसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा ने पर्दे में रहते हुए जनाज़े की नमाज़ में शिरकत फरमाई। एक बुजुर्ग फरमाते हैं कि नमाज़े जनाज़ा के बाद मैंने गैब से एक निदा सुनी कि **"इनल्लाह क़द ग-फ-रा ले-कुल्ले-मन-सल्ला-अलश्शाफई-बिश्शाफई-व ग-फ-रा ले-शाफई बिस्सलाते सय्यदतिन्नफीसा"** यानी **"अल्लाह तआला ने इमाम शाफई के वसीले से हर उस शख़्स को बख़्श दिया जिस ने इमाम शाफई के जनाज़े की नमाज़ पढ़ी और इमाम शाफई को सय्यदा नफीसा की नमाज़ की वजह से बख़्श दिया"**। जो उन्हों ने इमाम शाफई के जनाज़े की पढ़ी।

हाजत पूरी होने के लिए बीबी नफीसा की मन्नत

आरिफ बिल्लाह इमामे अजल अल्लामा अब्दुल वह्हाब शेअरानी रहमतुल्लाहे तआला अलयह अपनी किताब मुस्तताब **"तबक़ाते कुब्रा"** में हज़रत अल्लामा मुहम्मद शाज़ीली रहमतुल्लाहे तआला अलयह के अहवाल में फरमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद शाज़ीली रहमतुल्लाहे तआला अलयह फरमाते हैं कि मैंने ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम की ज़ियारत की। आप ने फरमाया कि जब तुम्हें कोई हाजत हो और उस का होना चाहो, तो सय्यदा नफीसा ताहेरा के लिए कुछ मन्नत मान लिया करो, अगरचे एक ही पैसा, तुम्हारी हाजत पूरी हो जाएगी। सुबहानल्लाह ! इस इज़्ज़तो-मक़बूलियत को देखिए कि खुद सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम सय्यदा बीबी नफीसा ताहेरा रदीअल्लाहो तआला अन्हा के लिए मन्नत मानने को वसीला क़ज़ाए हाजात फरमाते हैं।

सय्यदा ताहेरा बीबी नफीसा की रहलत

आप ने अपनी क़ब्रे मुबारक अपने ही मुबारक हाथों से तामीर फरमाई और उस में एक सौ नव्वे (१९०) कुरआने अज़ीम ख़त्म फरमाए। मुसलसल मुजाहिदात व रियाज़त की वजह से आप का जिस्म शरीफ कमज़ोर हो चुका था। अब बीमारी ने ज़ोफ व नक़ाहत और भी बढ़ा दीए। रमज़ानुल मुबारक का महीना था, मगर शदीद

बीमारी और कमज़ोरी की हालत में भी आप रोज़ा रखती थीं और रोज़ा क़ज़ा होने न देती थीं । हकीमों ने बहुत कुछ कहा और मश्वरे दीए कि सय्यदा ! अब रोज़ा छोड दें, वर्ना बीमारी बढ़ जाने का ख़ौफ है । आप ने फरमाया कि हरगिज़ नहीं । मैं तीस साल से अपने करीम और रहीम मौला से यही अर्ज़ करती हूँ कि इलाहल अलामीन! मेरी रूह रोज़े की हालत में परवाज़ हो । ये मेरी दिली आरज़ू और तमन्ना है । तो ए लोगो ! क्या तुम मेरी इस आरज़ू को ख़ाक में मिलाना चाहते हो ? फिर आप ने अरबी का ये शेअर इरशाद फरमाया ।

"अस्रेफू-अन्नी-तबीबी-व-अदऊनी-व-हबीबी" यानी **"हकीम को मुझ से दूर हटाओ और मुझे मेरे हबीब पर छोड दो ।"** रमज़ानुल मुबारक के दरमियानी अर्से तक यही हालत रही । जब विसाल का वक़्त क़रीब आया । आप ने क़ुरआन शरीफ की तिलावत शुरू फरमा दी । और जब आप तिलावत करते हुए इस आयत पर पहूंचीं :- **"लहुम-दारुस्सलामे-इन्दा-रब्बिहिम-व-हुवा-वलिय्योहुम-बेमा-कानू-यअमलून"** (पारा : ८, सूरतुल अनआम, आयत नं : १२७) तर्जुमा: **"उन के लिए सलामती का घर है । अपने रब के यहां और वो इन का मौला है । ये उन के कामों का फल है"** (कन्ज़ुलईमान) उस वक़्त सय्यदा पर गशी तारी हुई । आप की भतीजी फरमाती हैं कि उस वक़्त मैं सय्यदा से लिपट कर रोने लगी कि, आह ! ये नूरानी सूरत चंद लम्हों के बाद पर्दापोश हो जाएगी । सय्यदा ने कलमए शहादत पढ़ा और रूहे मुबारक आ'ला इल्लिय्यीन में पहुंची ।(इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलयहे राजेऊन)

आप की वफात शरीफ के रोज़ मिस्र का कोई घर ऐसा न था कि जिस से सय्यदा के गम में रोने की आवाज़ न आई हो । आप की वफात हि. २०७ रमज़ानुल मुबारक के अश्रए-औसत में हुई ।

आप को मिस्र में दफन करने का लोगों का इसरार

हज़रत सय्यदा ताहेरा बीबी नफीसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा का विसाल हुवा, तो आप के ख़ाविंद मोहतरम हज़रत सय्यद इस्हाक़ रदीअल्लाहो तआला अन्हो ने आप को मदीना मुनव्वरा के मुक़द्दस क़ब्रस्तान **"जन्नतुल बक़ी"** में दफन करने का इरादा फरमाया । अहले मिस्र को ये मालूम कर के बहुत ही रंजो-मलाल हुवा । लोगों ने हज़रत सय्यद इस्हाक़ से अर्ज़ की कि हुज़ूर ! बराहे करम मोहतरमो-मगफूरा सय्यदा के जिस्मे पाक को मिस्र ही में दफन किया जाए । लैकिन आप ने इनकार फरमा दिया । जब हज़रत सय्यदना इस्हाक़ सोए तो ख़्वाब में हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम शहनशाहे कौनैन के जमाले जहांआरा के दीदार से मुशर्रफ हुए । आप ने इरशाद फरमाया कि ए इस्हाक़ ! अहले मिस्र को नाराज़ मत करो और बीबी नफीसा ताहेरा को मिस्र ही में दफन करो । चुनांचे आप को मिस्र में ही दफन किया गया । आप का मज़ारे पाक मरजए ख़लाइक़ है । बड़े बड़े औलियए-किराम व मशाइख़े इज़ाम आप के मज़ारे पाक पर हाज़िर हो कर फ़ुयूज़ो-बरकात हासिल करते हैं ।

आप का मज़ार फ़ुयूज़ो बरकात का गंजीना

हज़रत सय्यदा ताहेरा बीबी नफीसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा का मज़ार शरीफ हुसूले मुराद व मक़सद के लिए मुजर्रब और तिरयाक है । बेशुमार हाजतमंदों की हाजत रवाई आन की आन में आप के आस्तानए आलिया से हुई हैं । हम ने हज़रत सय्यदा के हालाते ज़िंदगी और सीरते तय्यबा को जिस मुस्तनद और मोअतबर किताब से अख़्ज़ किया है, उस किताब का नाम **"नूरूल-अबसार-फी-मनाक़िबे-अहले-बैतुन्नबिय्यिल-मुख़्तार"** है । इस किताब के मुसन्निफ इमामे अजल, **अल्लामा शरनबलानी** रहमतुल्लाहे तआला अलयह हैं । इस किताब की वजहे तसनीफ में अल्लामा शरनबलानी तेहरीर फरमाते हैं कि मेरी आँखों में आशोबए-चश्म का मर्ज़ लाहिक़ हुवा । जिस की वजह से आँखों में शिद्दत से दर्द और कुलफत थी । मैंने बहुत ही इलाज और मआलेजा किया, लैकिन मर्ज़ और दर्द में कुछ भी अफाक़ा या फायदा न हुवा । बिल-आख़िर दर्द से बेचैन और परेशान हो कर हज़रत सय्यदा के मज़ारे पाक पर हाज़िर हो कर मैंने इस्तिगासा किया और मन्नत मानी कि अगर सय्यदा बीबी नफीसा रदीअल्लाहो तआला अन्हा के वसीले और तुफैल से मुझ को शिफा हासिल हुई, तो एक किताब अहले बैत अतहार के फज़ाइल व मनाक़िबो-अहवाल में तस्नीफ करूंगा । इस मन्नत का मानना था कि चंद रोज़ में मुझ को शिफाए कामिला हासिल हो गई । लिहाज़ा मैंने

अपनी मन्नत पूरी करते हुए ये किताब अहले बैते किराम के मनाक़िब में तेहरीर की ।

अल्लामा शरनबलाती के अलावा मिल्लते इस्लामिया के दीगर अज़ीम बुज़ुर्गों ने भी हज़रत सय्यदा के मज़ारे अक़दस से बेशुमार फ़ुयूज़ो बरकात हासिल किए हैं । कई ना-मुरादों के ख़ाली दामन आप के तुफैल गौहरे मुराद से भर गए हैं और ला-इलाज बीमारीयों के मरीज़ों ने आप के आस्ताने की हाज़री के तुफैल शिफा व सहत हासिल की हैं ।

सय्यदा की सीरत मिल्लते इस्लामिया के लिए मशअले राह

अल्लाह तबारक व तआला की बेशुमार नेअमतें नाज़िल हों, उस मुक़द्दस सय्यदा ज़ाहिदा आबिदा ताहेरा नफीसा ख़ातूने अहले बैत के मज़ार पर, जिस ने अपनी सीरते पाक को शरीअत की इताअत और इबादतो-रियाज़तो-ज़ोह्दो-तक़्वा व ख़ौफे ख़ुदा का अमली नमूना बनाया और सख़ावतो-ईसार का मिसाली पैकर बनकर मिल्लते इस्लामिया को ज़िंदगी के नस्बुल-ऐन से आगाह कर के उस्वा-ए-हसना का अमली दर्स दिया । सय्यदा के हालाते ज़िंदगी का मुतालेआ करने पर यही साबित होता है कि आप ने हमेशा अल्लाह तआला की इबादत में शब बेदारी फरमाई और अय्यामे ममनूआ के अलावा हमेशा दिन को रोज़ा रखा । नफ्स को मशक़्क़त देना और ख़्वाहिशाते

नफ्स को मार कर दुनिया की लज़्ज़तों और ऐशो-आराम से दूर रहना, ये कोई आसान बात नहीं । एक हम भी हैं कि पूरी रात बेदार रह कर इबादतो-रियाज़त करना तो दर किनार, इशा और फज्र की नमाज़ भी हमारी तबीयतों पर बारे गिराँ मालूम होती है । नवाफिल तो नवाफिल हैं, बल्कि रमज़ानुल मुबारक के फर्ज़ रोज़े भी हमारे सरकश नफ्स को पहाड की तरह भारी लगते हैं । और इस पर सितम ये है कि रमज़ानुल मुबारक में एलानिया तौर पर बाज़ारों में और सडकों पर खाने पीने और पान बीडी का इस्तमाल कर के माहे रमज़ानुल मुबारक की अज़्मत और हुरमत का लिहाज़ भी नहीं करते । बक़ौल हज़रत रज़ा बरैल्वी :-

शर्मे नबी, ख़ौफे खुदा-ये भी नहीं, वो भी नहीं ।

हज़रत सय्यदा ने अपनी ज़िंदगी में तीस हज अदा फरमाए और इन में से अक्सर हज आप ने पैदल सफर कर के अदा फरमाए । आप का ये किरदार मिल्लत के लिए सबक़ आमोज़ है । आज हम हवाई जहाज़ की सहूलत के दौर में आसान सफर होने के बावजूद और माली व जिस्मानी इस्तिताअत होने के बावजूद भी हज के अहम फरीज़े को अदा करने से गफलत बरतते हैं । उम्र में एक मरतबा फर्ज़ हज अदा करने की तौफीक़ नहीं होती, बल्कि हज़ारों हीले और बहाने पैश करते हैं । लैकिन माले दुनिया के हुसूल के लिए दूरो दराज़ के तिजारती सफर करने में कोई दुशवारी नहीं होती । दुन्यवी सफर में तमाम क़िस्म की सऊबतें और मुसीबतें बर्दाश्त करने के लिए हमा वक़्त

तनो-जान से तय्यार हैं, लैकिन दौलते उक़्बा और रज़ाए मौला के हुसूल के लिए डेढ़ या दो माह का सफर करने में काहिली की जाती है ।

हज़रत सय्यदा का अपने हाथ से अपनी क़ब्र तय्यार करना और उस पर एक सौ नव्वे (१९०) क़ुरआन शरीफ ख़त्म करना, किस क़दर सबक़ आमोज़ है । हम से तो साल भर में भी एक क़ुरआन मजीद ख़त्म नहीं होता । तिलावते क़ुरआन मजीद के लिए हमारे पास वक़्त नहीं, लैकिन फिल्मी अफसाने, आशिक़ाना नाविल, जज़्बाते शहवत को उभारने वाले फहश अफसाने, लग्व और झूठे क़िस्से कहानियां व नीज़ अख़बार बीनी, टी. वी., वीडीयो वगैरा लहवो-लइब के लिए काफी वक़्त है । लेकिन अफसोस ! आज के फैशन याफ्ता और माडर्न मुसलमान के पास दीनी किताबें पढ़ने के लिए और क़ुरआने अज़ीम की तिलावत करने के लिए वक़्त नहीं है । हमें सय्यदा की सीरत से पन्दो नसीहत हासिल करना चाहिए ।

हज़रत सय्यदा का अपनी नज़र का तमाम मालो-दौलत उस बेवा बुढ़िया को दे देना और पाँच सौ दिरहम में से अपने खर्च के लिए एक दिरहम भी न लेना, मिल्लते इस्लामिया को सख़ावत, ईसार, क़ुरबानी, हमदर्दी और इख़्लास का दर्स दे रहा है । आज तो ये हालत है कि लोगों की निय्यतें इतनी ख़राब होगई हैं कि इल्ला माशा अल्लाह ! हर वक़्त यही सोच व फिक्र रहती है किसी का माल किस तरह छीन लूं । देने के बजाए लेने की निय्यत लगी रहती है । और ये भी देखा जाता है कि सख़ावत में

भी अक्सर रिया, और नामो-नमूद का जज़्बा कारगर होता है । इख़लास, ख़ुलूस और लिल्लाहियत बहुत कम नज़र आती है । हमें चाहिए कि हज़रत सय्यदा के मुख़्लिसाना किरदार की पैरवी करें और अपने हर काम में ख़ुलूसे निय्यत इख़्तियार करें और अपने मो'मिन भाईयों की हमदर्दी का जज़्बा अपने दिल में ज़िंदा रखते हुए ईसारो क़ुरबानी और सख़ावत को इख़्तियार करें ।

सय्यदा बीबी नफीसा के नाम की मन्नत

हज़रत सय्यदा के नाम की मन्नत हमारी मुश्किलात के हल के लिए निहायत ही मुजर्रिब वसीला है । इमामे अजल सय्यदी अल्लामा शाज़ीली रहमतुल्लाहे तआला अलयह को हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम का ख़्वाब में इरशाद फरमाना कि जब तुम्हें कोई हाजत पेश हो तो सय्यदा नफीसा ताहेरा की नज़्र मानो । हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम के इरशाद मुबारक से सय्यदा बीबी नफीसा की जलालत व शानो-उलू मरतबा साबित होने के साथ साथ ये भी साबित होता है कि औलिया-ए-किराम के नाम की नज़्रो-नियाज़ जाइज़ और मुस्तहसन है । अलावा अज़ीं इस ख़्वाब को इमामे अजल अल्लामा अब्दुल वह्हाब शेअरानी रहमतुल्लाहे तआला अलयह ने अपनी मोअतबरो-मुस्तनद किताबे मुस्तताब **"तबक़ाते कुब्रा"** में नक़ल फरमाया है । यही इस के सिद्क़ो-सदाक़त की दलील है ।

एक ज़रूरी अम्र की तरफ निशानदेही कर देना ज़रूरी है कि जो नज़्रो नियाज़ का लफ़्ज़ बोला जाता है, वो मुहावरतन है और इस से मुराद वो हदिया या ईसाले सवाब है, जो उन की हयाते जाहेरी, ख़्वाह उन की हयाते बातेनी में उन की ख़िदमत में पेश किया जाता है । इस के जवाज़ में क़तअन कोई शक व शुब्ह नहीं । इस के जाइज़ होने पर अकाबिर मिल्लते इस्लामिया और मशाइख़े तरीक़त का इत्तेफाक़ है ।

अल्लाह तबारक व तआला हर सुन्नी मुसलमान के दिल में अपने महबूबे आज़म सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम और आप की मुक़द्दस आल की और औलियाए-किराम की सच्ची महब्बतो अज़मत अता फरमाए और उन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफीक़ अता फरमाए । आमीन .... या रब्बल आलमीन